Val II, Issue:VIII, Sept 2012

ISSN : 2230-7850

Indian Streams Research Journal

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N. Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 8, Sept 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

मानवीय संवेदनाओं के कवि : केदारनाथ अग्रवाल

कमलकिशोर गुप्ता

सहायक आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
सिंधु महाविद्यालय नागपुर

प्रस्तावना :–

मैं हूँ अनास्था पर लिखा
आस्था का शिलालेख
नितांत मौन
किन्तु सार्थक और सजीव

प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार आधुनिक काव्यधारा के एक सशक्त हस्ताक्षर केदारनाथ अग्रवाल है। कविवर केदारनाथ अग्रवाल ने अपने काव्य में गाँव के भोले – भाले किसानों की कुंठाओं, अभावों, आकांक्षाओं, शोषणों तथा उनकी चीख – पुकारों का यथार्थोन्मुख चित्रण किया है।

उनकी काव्य आत्मा की गहराई को पहचानकर सुप्रसिद्ध जनकवि नागार्जुन ने उन्हें धरती का पुत्र कहकर पुकारा, उनके शब्दों में –'जनगण के जागृत शिल्पी तुम धरती के पुत्र।'

परिचय – जन्म – केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल सन् 1911 को बांदा जिले के कमासिन गाँव में हुआ। गाँव के लोग और उनके नजदीकी उन्हें प्रायः 'किद्दी केदरवा' कहकर पुकारते थे। जब वे 7 वीं कक्षा में थे तब उनका विवाह पार्वती देवी से हो गया। आपके पिताजी श्री हनुमान प्रसाद एक अच्छे कवि थे। सांस्कृतिक व साहित्यिक संस्कार आपको धरोहर में मिले थे। 9 वीं कक्षा में माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'मालिन' की तर्ज पर आपने एक कविता 'तोता' लिखी थी जो 'सेवा' पत्रिका में प्रकाशित हुई।

शिक्षा – दीक्षा – आपकी प्रारंभिक शिक्षा – दीक्षा गाँव में ही हुई। सन् 1937 ई. में उन्होंने कानपुर से एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की और सन 1938 ई. में बांदा आकर वकालत करने लगे। किन्तु बाद में वकालत छोड़कर जीवनभर वे हिन्दी कविता को समर्पित रहे। कवि की कविता सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती है

साहित्य – रचनाएँ – केदारनाथ द्वारा रचित रचनाएँ इस प्रकार है –

1) काव्य संग्रह – नींद के बादल, युग की गंगा, लोक और आलोक, फूल नहीं रंग बोलते है, आग का आईना, हे मेरी तुम, अपूर्वा, कहे केदार खरी – खरी, बोले बोल अबोल आदि प्रमुख काव्य संग्रह है। काव्य रचना के साथ 'पतिया' नामक उपन्यास, 'बस्ती खिले गुलाबों की' यात्रा वृत्तांत, 'मित्र – संवाद' नामक पत्र – साहित्य की रचना की है। साथ ही 'समय – समय पर' विचार – बोध', 'विवेक – विवेचन, नामक निबंध – संग्रह भी लिखे है।

सम्मान एवं पुरस्कार – सन् 1973 ई. में कविवर केदारनाथ अग्रवाल के 'फूल नही रंग बोलते है' काव्य संग्रह को सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही उनके 'अपूर्वा' काव्य – संग्रह के लिए सन् 1986 ई. में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उसी प्रकार उनको 1984 में उत्तर प्रदेश संस्थान का विशिष्ट पुरस्कार तथा 1990 में मैथिलीशरण गुप्त सम्मान मिला। 22 जून 2000 को यह महान कवि चिर निद्रा में सो गया।

कवि केदारनाथ अग्रवाल का काव्य :

एक दृष्टि – कवि केदार ने अपने आस – पास जो भी देखा, अनुभव किया, समाज में व्याप्त सामाजिक विषमता, संस्कृति, परिवेश, बुंदेलखंड की लोक संस्कृति और लोकजीवन को कविता का विषय बनाया। उनकी रचनाओं में जनता की पीड़ा, दुःख, अभावों का दर्द विशेष रूप से उभरकर सामने आया है। 'युग की गंगा' में उन्होंने एक स्थान पर लिखा है – "अब हिन्दी में कविता न तो रस की प्यासी है, और न ही अलंकार की इच्छुक और न ही संगीत की तुकांत पदावली की भूखी है। अब वह चाहती है किसान की वाणी, मजदुरों की वाणी और जन – जन की वाणी।"[2] वह देश में जागरूकता लाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने सब प्रकार की जड़ताओं, अंधविश्वासों, परंपराओं, धार्मिक कट्टरता आदि पर बड़ा तीखा प्रहार किया है।

'नींद के बादल' कवि का प्रथम काव्य संकलन है। प्रणय से संबंधित संयोग और वियोग की भावनायें ही विभिन्न आवृत्तियों में इसमें

Please cite this Article as : कमलकिशोर गुप्ता , मानवीय संवेदनाओं के कवि : केदारनाथ अग्रवाल : Indian Streams Research Journal (Sept. ; 2012)

अभिव्यक्त हुई है। कवि नींद के बादलों को रोमांटिक भावना का प्रतीक बतलाते हुए वह उनसे विदा लेता है और नवजागरण के नवप्रभात की लालिमा का स्वागत करते हुए कहता है –

लेकिन प्यारे नींद के बादल
लाल सबेरा होते – होते
सब होने लगते है ओझल।

'युग की गंगा' तथा 'लोक और आलोक' की रचनाएँ सामाजिक चेतना से अनुप्राणित है। सर्वप्रथम कवि सामाजिक जीवन में परिव्याप्त विशमताओं और असंगतियों का अंकन करता है। जो किसानों, मजदूरों तथा मध्यवर्ग के श्रमजीवियों से संबंधित है। समाज का उच्च वर्ग समानता की स्थापना का विरोधी होता है, किन्तु जब निम्नवर्ग में अपनी हीन – दशा के प्रति क्षोम उभरता है और उसमें यह चेतना आती है कि क्रांति के द्वारा वे अपने जीवन को सुख – सुविधामय बना सकते हैं, तब उनकी शक्ति को कोई रोक नही सकता और वे अपने जीवन के परिवर्तन में सफल होते है। कवि के शब्दों में

हमारे जिंदगी के दिन, बड़े संघर्ष के दिन हैं !
इरादा कर चुके हैं हम, प्रतिज्ञा आज करते हैं।
हिमालय और सागर में, नया तूफान रचते हैं।
गुलामी को मसल देंगे, न हत्यारों से डरते है।
हमें आजाद जीना है, इसी से आज मरते हैं।

केदारजी ने देश और समाज के भीतर व्याप्त नाना पाखंडों और विसंगतियों पर प्रहार किया है उन्होंने नेता, सामंत पर करारा व्यंग्य किया है इस संबंध में नामवर सिंह अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं – ''केदारजी के नुकीले व्यंग्य कितने प्रभावशाली हैं, इसे जनता के दुश्मन ही जानते है। इसी के माध्यम से उन्होंने समाज और मानवता विरोधी तत्वों पर गहरा प्रहार किया हैं।'' इससे संबंधित कुछ पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ।

खून करो जी, खून करो जी
नेता शाही प्यार में
ग . ग .   ग . ग . ग
है भूख बडी लंबी – चौड़ी
दस – बीस जनों का सब खाना
ये अकेले खाते हैं,
दिन भर ही पागुर करते हैं,
हम देखते ही रह जाते हैं।

देश में बडी तेजी से दो दल बनते जा रहे है, एक कहता है दुनिया जल्दी बदले – दूसरा कहता है दुनिया कभी न बदले। लेकिन न बदलने वाले अकेले पड़ रहे है और बदलनेवालों के साथ सारा देश आ रहा है हाल ही में जनलोकपाल विधेयक के लिए अन्ना हजारे द्वारा किये जाने वाले अनशन व आंदोलन को पूरे देशवासियों का मिलता समर्थन इसका ज्वलंत उदाहरण है। यहाँ पर कवि की दूरदृश्टि स्पश्ट दिखलाई देती है। कवि ने 'रनिया बहिन' नामक कविता में इस तथ्य को प्रकट किया है –

रनिया कहती है, जग बदले ! जल्दी बदले, जल्दी बदले।
मैं कहता हूँ कभी न बदले, कभी न बदले – कभी न बदले।

सामाजिक भूमिका के आधार पर कवि ने 'लोक और आलोक' में स्वयं को अन्य प्रगतिशील लेखकों को, जीवन का भाश्यकार और जनवादी घोषित किया है। यथा –

हम लेखक हैं, कथाकार है।
हम जीवन के, भाश्यकार है
हम कवि है जनवादी।

कवि केदार ने सहज – सरल शैली में भी अपने मन के विचारों को कुशलतापूर्वक चित्रित किया है। 'ओस की बूंद कहती है' कविता में कवि जीवन के सरोकारों को अत्यंत सहज तरीके से इस तरह प्रकट करते हुए कहते हैं –

ओस बूंद कहती है लिख दूँ
जब गुलाब पर मन की बात
कवि कहता है मैं भी लिख दूँ
प्रिय शब्दों में मन की बात
ओस बूंद लिख सकी नही कुछ
नव गुलाब हो गया मलीन
पर कवि ने लिख दिया ओस से
नव गुलाब पर काव्य नवीन।

कवि के समूचे सर्जन में प्रकृति व सौंदर्य बोध की अंतरंगता न केवल बेजोड़ है बल्कि एक नए संदर्भो में भी कवि की काव्य प्रतिभा को उद्घाटित करती है।

कवि की भाषा सामान्य भाषा कही जा सकती है। यथार्थ जीवन को चित्रित करने के लिए प्रायः लोक व्यवहार में आनेवाले शब्दों का प्रयोग किया है।

कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता सदैव जीवनमूल्यों, मानवीय सरोकारों और जमीन के ईद–गिर्द पनपती, उफनती, नर्तन करती वह मनोहारी निर्झरिणी है, जिससे शक्ति पाकर न केवल समूचा जन–जीवन प्रतिबिंबित व उल्लासित हो उठता है बल्कि हताश, निराश हो चुके मनो में भी पुनः प्राण का संचार कर चैतन्यता प्रदान करता है।

कवि केदार की कविता, प्रगतिवादी कविता को एक नई स्फूर्ति, चेतना व मंच भी प्रदान करती है। वे कबीर की भाँति अपनी बात को सीधे खरा – खरा कहने में विश्वास रखते है, उनका काव्य आज भी प्रासंगिक है। इस संबंध में भाषा पत्रिका के संपादक श्री शसिद्वाज विचार व्यक्त करते हुए लिखते है –'' केदारनाथ अग्रवाल, बाबा नार्गाजुन और त्रिलोचन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी त्रयी है। जिनके बारे में जितना लिखा जाए उतना कम। केदारनाथ अग्रवाल इसी त्रयी की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। बुंदलेखंडमें जन्में केदार को 'आधुनिक कबीर' कहा जाए तो कुछ गलत नही होगा। वे जितना खरा – खरा लिखते थे उतना ही खरा – खरा बोलते भी थे। वे प्रगतिशील आंदोलन के कवि थे। जनजीवन की समस्याओं से जुड़े इस कवि को प्रकृति का सौंदर्य जितना लुभाता था, उतना ही आकर्शित करता था उन्हें खेतों में हाड़–तोड़ मेहनत करता किसान और उसकी देह से टपकता पसीना। साठ – सत्तर के दशक में किसानों की व्यथा पर लिखी गई उनकी कविताएँ आज भी उतनी प्रासंगिक हैं[6]।

साहित्य में स्थान – केदारनाथ अग्रवाल का आधुनिक प्रगतिवादी काव्य में अपना विशिष्टस्थान है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं। कविवर केदार अग्रवाल देश और समाज के उत्थान के लिए अपनी लेखनी के द्वारा नई चेतना लाना चाहते थे, सामाजिक बुराइयों को उखाड़ फेंकना चाहते थे। इस प्रकार वह अपने संपूर्ण जीवन में एक सच्चे साहित्यकार का दायित्व निभाते रहे है। कवि केदार की पावन जन्मशती के अवसर पर कलम के इस प्रखर चितेरे को मेरा कोटि – कोटि नमन् !

संदर्भ ग्रंथ :–

1) भाषापत्रिका – केंद्रीय हिंदी निदेशालय – मई – जून 2011
2) युग की गंगा – केदारनाथ अग्रवाल
3) प्रतिनिधि कविताएँ – केदारनाथ अग्रवाल
4) भाषापत्रिका – केंद्रीय हिंदी निदेशालय – मई – जून 2011
5) लोक और आलोक – केदारनाथ अग्रवाल
6) भाषापत्रिका – केंद्रीय हिंदी निदेशालय – मई – जून 2011

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal

For All Subjects

Dear Sir/Madam,

We invite original unpublished research paper. Summary of Research Projetc, Theses, Books and Books Review of publication, You will be pleased to know that our journals are..

Associated and Indexed, India

- *OPEN J-GATE*
- *International Scientific Journal Consortium Scientific*

Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- DOAJ
- EBSCO
- Index Copernicus
- Academic Journal Database
- Publication Index
- Scientific Resources Database
- Recent Science Index
- Scholar Journals Index
- Directory of Academic Resources
- Elite Scientific Journal Archive
- Current Index to Scholarly Journals
- Digital Journals Database
- Academic Paper Database
- Contemporary Research Index

Indian Streams Research Journal
258/34, Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact:- 9595359435
E-Mail- ayisrj@yahoo.in / ayisrj2011@gmail.com
Website:- www.isrj.net